

21/3/56

असाधारण vextraordinary

भाग II—कण्ड 3—उप-कण्ड (ii) PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

ਜਂ∘ 605] No. 605] नई बिल्लो, बृहस्पतिबार, विसम्बर 26, 1985/पौष 5, 1907 NEW DELHI, THURSDAY, DECEMBER 26, 1985/PAUSA 5, 1907

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के इत्य में रखा का सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compliation

विच महास्थ्य

(राजस्य विभाग)

गधिसूनन!

नर्ड दिल्ली 26 विसबर 1985

का आ 912(अ) — केन्द्रीय संस्कार स्वापक औषधि और मन प्रभावी दल्लये प्रधिनियम 1985 (1985 को 61) की धारा 34 और 39 ने संध पठित धारा 76 द्वारा प्रदत्त गमितवाको प्रयाग करते हुए निम्नाजिखित नियम बनानी है भ्रषीन — -

ा सक्षिप्त नाम और प्रारभ (।)इन नियमारा सक्षिप्त नॉम स्वापक औषधि और मनप्रभावी पक्षाप (सिद्धदापाया व्ययनिया द्वारा व्यथन निष्पादन। नियम, ।৪১১ ই।

(2) ये राजपत्त म प्रकाशन की नारीख का प्रवृत्त हींगें।

2 धारा 3.4 क अधीन निष्पादित किए जीन वाले बधपत का प्रमण— जब कभी किशी व्यक्ति को स्वापत आपधि और मन प्रभावी पदार्थ अधि-निग्रम, 1995 (जिसे इससे इसके पल्चीत् अधिनियम कहा गया है) त इसकार 1 के किसी उपबंध के प्रोधीन दहनीय किसी अपराध के लिए वापसिद्ध किया जाता है, तब बधाव का प्रक्रम जिसे काई न्यासालय अधिनियस की धारी 34 के अधीन उसके द्वारा निष्पादित किए जॉन की अपका करना इन नियमा से उपाबद्ध प्रकृष 1 के रूप में हागा।

। धारा 39 में प्रश्नीत निष्पादित किए जान वाल बन्नपन्नी वे प्रम्प (1) जब स्थापक श्रीषधि या मन प्रभावी पदार्थ का व्यस्ती काई व्यक्ति प्रश्नित्यम की धारा 27 के प्रधोत दश्नीय विभी अपराध को दार्थ। पाया जाता है आर न्यायालय क्विंदिश केरता है कि ऐस ध्यक्ति का उसके द्वारी बन्नपन्न निष्पादित किए जान पर, चिकित्सीय उपचार के लिए छाट दिया जाए तो ऐसे बन्नपन्न का प्रमुप इन नियमों से उपबिद्ध प्रमुप 2 के रूप में हागी।

(2) जब बाधिनियम की धारा , 40 की उपधारा (1) के ब्रांधीन निराविधीकरण या निराव्ययन की चिकित्सीय उपचार कराने के लिए छोड़े गए किसी व्यक्ति में न्यायालय हारा उसधारा की उपधारा (2) के ब्रांधीन उसके छोड़े जाने में पर्व बापत्र निष्पादित किए जाने की अपेक्षा की जाते हैं ती एसे ब्रांधित का प्रकार की निष्पादित किए जाने की अपेक्षा की जाते हैं ती एसे ब्रांधित का प्रकार इन निष्पों से उपाबद्ध प्रकार के रूप में लागा।

प्रप ।

(नियम 2 देखिए)

रवापक आपधि आर मनाप्रभावी पदार्थ प्रतिनयसः 1985 के ध्रम्याय 1 के प्रधीन काई ध्रपराध करन में प्रविरत रहने के लिए प्रधान

मृझ ते (नाम)पुर्वा/पुर्वा/पर्वा
E 1
श्री
हो। निधामी है, सोधनियम के प्रध्यास । के स्रधान कोई प्रपेशिध करने से
पविरत रहने के थिए
प्रधपन निष्पायित करन की घरोशा की गई है। शत. मैं उक्त ग्रयिट रे
दौरान ऐसा कोई प्रपराध न करने के लिए स्थय को संबद्ध करता हू आर
इसमें मेरे द्वारा कोई व्यतिकम किए जाने का दणा भ. में
को भावदे करना है।
•
नारीख हस्ताक्षर
जहां प्रतिभृतियो सहित तिष्पादित किए जाने की भ्रमेक्षा की जाए
वर्षा यह ज्ञान्।
हम ऊपर नामिन
प्रतिम् घोषित करों हैं कि बह () उका अवधि के दौरात
्रवापक औषधि और मन्यभावी पदार्थ अधिनियम, 1985 के अध्याय 4
के अक्षीन अपराध करने में प्रक्रियन रहेगा/रहेग और इसमें उसके द्वारा
कोई व्यक्तिकम किए जाने की दशों में, हम संयुक्त और अलग-शलग रूप
काइ ज्यानका क्रिंग गांच का का प्रशास, इस रायुक्त जार अलगणनाचा स्व में स्वयं की — स्वाम क रणम सरकार की समयहन
स स्वयं कार्याः । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।
भूगिनी त्रम
हस्ताक्षर
ਸ਼ੁਦਾ-2
[नियम $3(\hat{1})$ देखिए]
निराविर्पःकरण्/निराध्यसन चिकित्सीय उपचार के पण्यान् न्यायालय के
समक्ष उपस्थित होने वे लिए और स्वापक औषधि और मनप्रभाषी पढार्थ
अधिनियम, 1985 के अध्याय 4 के अधिन काई अपराध करने में प्रविदा
महने के लिए अंग्रम्थ।

तारी ख	 	(THT)41

जहां प्रतिमृतियों यहित बंधपत्न निष्पादित किए आने की श्रपेक्षा की गई वहां जोडिए)

हम उपर नामित -----के लिए स्वयं को प्रतिश् घोषित करने हैं। यह कि वह (पुरुष/स्त्रों) तार्राख----से पहले न्यापालय के समाज उपस्थित होगा/होगी और क्रपने विकित्सीय उपचार कार स

<u>ಕ್</u>ರಕ್ರುಕ್ರಕ್ಷ

मुस्य-,(

[देखिए नियम 3(2)]

गायालय द्वारा थिनिदिष्ट की जाने बाली संबंधि के लिए स्वापक जीवित और भनाप्रभावी पदार्थ ब्रिजिन्समा 1985 के ब्रध्याय-१ ने बर्धीन कार्ड प्रपासंघ करने से प्रविश्व रहते और इस पक्तर प्रविश्व रहते म यसका होने पर, न्यायालय के समक्ष उपस्थित होने और ऐसी ध्यक्ति के दारान करोला की जाने पर दण्डादेश प्राप्त करने के लिए वर्षाय

|--|

ट-नाश्च ^र

(जहा प्रतिभति संदित बध-पव निष्पादित किया जाना है, बण आधिए)

चरना**क्षा**र

[प्रथिम्बन स. 1.४८६ का. स. 66451/85-अफीम] वी. फार रेड्डी एएट समिव

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)
NOTIFICATION

New Delhi, the 26th December, 1985

S.O. 912(E).—In exercise of the powers conferred by section 76, read with sections 34 and 39, of the Narcotic Drugs and Psychotropic Substances Act, _____

1985 (61 of 1985), the Central Government hereby makes the following rules, namely:—-

_ - - _ _ _ - _ -

- 1. Short title and commencement, (1) These rules may be called the Narcotic Drugs and Psychotropic Substances (Execution of Bond by Convicts or Addicts) Rules, 1985.
- (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.
- 2. Form of bound to be executed under section 34. Whenever any person is convicted of an offence punishable under any provision of Chapter IV of the Narcotic Drugs and Psychotropic Substances Act. 1985 (hereinafter referred to as the Act), the form of bond which a court may require him to execute under section 34 of the Act, shall be as in Form I appended to these rules
- 3. Forms of bonds to be executed under section 39.—
- (1) When any person addicted to any narcotic drug or psychotropic substance is found guilty of an offence punishable under section 27 of the Act and the court directs that such person be released for undergoing medical treatment on his entering into a bond, the form of such bond shall be as in Form II appended to these rules.
- (2) When any person released for undergoing medical treatment for de-toxification or de-addiction under sub-section (1) of section 39 of the Act is required by the court to enter into a bond before his release under sub-section (2) of that section, the form of such bond shall be as in Form III appended to these rules.

FORM I

(See rule 2)

Bond to abstain from commission of any offence under chapter IV of the Narcotic drugs and rsychotropic substances act, 1985

Whereas I, (name), son|daughter|wife of inhabitant of (place), have been called upon to enter into a bond to abstain from the commission of any offence under chapter IV of the Act, for the term of ... I hereby bind mysell not to commit any such offence during the said term and, in case of my making default therein, I hereby bind myself to forleit to the Government the sum of rupees.

Dated this day of 19

(Sîgnature)

(where a bond with sureties is required to be executed add).

We do hereby declare ourselves sureties for the above named that he she will airstain from the commission of offences under Chapter IV of the Narcotic Drugs and Psychotropic Substances Act, 1985 during the said term; and, in case of his'her making default therein, we bind ourselves, jointly &

Dated this

day of

- ____

19

(Signatures)

FORM II

{Sec rule 3(1)}

Bond to appear before the court after medical treatment for de-toxification de- addiction and to abstain from commission of any offence under chapter IV of the narotic drugs and psychotropic substances Act, 1985.

Dated this

day of

19

(Signature)

(Where a bond with sureties is required to be executed, add,---)

We do hereby declare ourselves sureties for the above named that he she will appear before the court before and furnish a report regarding the result of his her medical treatment and in the meantime he she will abstain from the commission of any offence under Chapter IV of the Narcotic Drugs and Psychotropic Substances Act, 1985 during the said term; and, in case of his her making default therein, we bind ourselves, jointly and severally, to forfeit to the Government the sum of tupees——.

Dated this

day of 19

(Signature)

FORM III

[See rule 3(2)]

Bond to abstain from the commission of any offence under chapter IV of the narcotic drugs and psychotropic substances act, 1985 for a period to be specified by the court and on failure so to abstain, to appear before the court and receive sentence when called upon during such period.

Whereas I, (name), son daughter wife of inhabitant have been called upon any enter into a bond to abstain from the commission of any offence under Chapter IV of the Narcotic Drugs and Psychotropic Substances Act, for the term of———, and I hereby bind myself not to commit any such offence during the said term and, in case of my making default therein. I hereby bind myself

__-__

_____ to appear before the Court and receive sentence when called upon during the said term. In case of my making default therein, I hereby bind myself to forfeit to the Government the sum of rupees----

Dated this

day of

19

(Signature)

(Where a bond with surrities is to be executed add)

We do hereby declare ourselves surcties for above named that he she will abstain from the commission of offence under Chapter IV of the Narcotic Drugs and Psychotropic Substances

1985 during the said term and on his her fadure so to abstain, he she will appear before the Court at receive sentence when called upon during the said term and in case of his/her making default therein, we bind ourselves jointly and severally to forfeit to the Government the sun, of rupres-

Dated this

day of

19

(Signature)

[Notification No 13/85 F. No. 664/51/85-OPIUM.] B. R. REDDY, Additional Secy.